डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 29.08.2020

व्याख्यान संख्या-48 (कुल सं. 84)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

छकि रसाल सौरभ सने मधुर माधवी गंध।

ठौर ठौर झूमत झपत भौंर झौंर मधु अंध।।

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' से उद्धृत है। इसके रचयिता रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं, जिनकी रचना 'बिहारी सतसई' हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता के क्षेत्र में रामचरितमानस के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

प्रस्तुत प्रसंग वसंत की मत्त कर देनेवाली शोभा के वर्णन का है। यह वर्णन ऐसा है जिससे मानिनी का मान स्वतः दूर हो जाए।

कवि का कहना है कि आम की मंजरी की सुगंध से छककर और वासंती लता की मधुर गंध से सने हुए पुष्परस की मदिरा से अंधे जैसे होकर भौंरों के समूह जगह-जगह पर झूमते फिरते हैं और फूली हुई लताओं पर जैसे टूटे पड़ते हैं।

प्रस्तुत दोहे के संदर्भ में यह विशेष ध्यातव्य है कि 'बिहारी सतसई' की अनेक प्रतियों में तथा हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' में भी दोहे के उत्तरार्ध अर्थात् दूसरी पंक्ति में 'भौंर' शब्द का दो बार प्रयोग है जबकि वास्तव में 'भौंर भौंर' न होकर 'भौंर झौंर' होना चाहिए, क्योंकि 'झौंर' का अर्थ 'समूह' होता है। बिहारी सतसई के सबसे प्रामाणिक संस्करण 'बिहारी रत्नाकर' में यही पाठ अर्थात् 'भौंर-झौंर' अपनाया गया है। लाला भगवानदीन की 'बिहारी-बोधिनी' में मूल पाठ में तो 'भौंर भौंर' ही छपा है, परंतु शब्दार्थ में उन्होंने 'झौंर' देकर उसका अर्थ 'समूह' किया है। इससे ज्ञात होता है कि उनका लक्ष्य 'भौंर झौंर' पाठ ही था, परंतु संभवतः मुद्रण-त्रुटि से 'भौंर भौंर' पाठ हो गया है।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

प्रस्तुत दोहे में स्वभावोक्ति अलंकार है। यहाँ यह विशेष ध्यातव्य है कि इस दोहे को यदि कवि की उक्ति मानें तो स्वभावोक्ति अलंकार होगा। यदि सखी का वचन नायिका के प्रति मानें तो उद्दीपन कराकर संघटन का उद्देश्य होने से पर्यायोक्ति अलंकार होगा। नायक का वचन नायिका के प्रति मानें तो रति साधन के उद्देश्य से भी पर्यायोक्ति अलंकार ही होगा। नायिका का वचन नायक के प्रति मानें तो वसंत में विदेश-यात्रा रोकने के भाव से आक्षेप अलंकार होगा। स्वयं दूती का वचन पथिक के प्रति मानें तो पर्यायोक्ति अलंकार होगा। रूपगर्विता नायिका का वचन भ्रमर के प्रति मानें तो प्रस्तुतांकुर अलंकार होगा। नायक के पास संदेश ले जाने के उद्देश्य से नायिका का वचन सखी के प्रति मानें तो पर्यायोक्ति अलंकार होगा। तात्पर्य यह कि उद्दीपन-वर्णन के प्रसंगों में वक्ता के अनुसार अलंकार का विचार होता है।